प्रकृति का घर्षण : विषैले वायरसों का आह्वान (Friction of Nature : Evoke of Venomous Virus)

डॉ. सुमित्रा देवी शर्मा
Assistant Professor
प्रभा देवी मेमोरियल महाविद्यालय, आमेर
लोक प्रशासन विषय में M.A., Ph.D., SET,
P.D.F. (ICSSR, New Delhi 2014-2016)
93, कैलाशपुरी, नियर जगतपुरा रेलवे स्टेशन
जगतपुरा, जयपुर (राज.) – 302 017

सार

हम प्रकृति के पालने में फलते–फूलते हैं। प्रकृति के साथ तालमेल जीवन का सूत्र है। तालमेल जरा भी बिगड़ा और प्रकृति का पलटवार। कोरोना काल प्रकृति की चेतावनी है। संकेत हैं कि पर्यावरण से छेड़छाड़ मानव के लिए जानलेवा साबित हो सकती है।

ये समय है कि हम चेतें। प्रकृति के संदेशों को समझें। मिलकर कदम उठाएँ। खुद की देखभाल के लिए हमें पहले प्रकृति की देखभाल करनी होगी।

सारे वायरस जलवायु परिवर्तन की औलादें हैं। जलवायु परिवर्तन अपनी औलादों को प्राणी–जगत तक पहुँचाता है और वे नए–नए वायरसों के वाहक बन जाते हैं। अभी हम खोज रहे हैं कि कोरोना किस प्राणी से होकर हमारे पास पहुँचा है।

जब तक हम यह खोज करेंगे तब तक प्रकृति कुछ और नए वायरस हमारे पास पहुँचा रही होगी। यह सिलसिला न आज का है, न कल खत्म होने वाला है। यह कार्बन के कंधों पर बैठा है और हमारे विकास के स्वर्णिम महल के कंधों पर कार्बन बैठा है। कार्बन को रोकना हममें से किसी के बस में नहीं है क्योंकि हमने कार्बन को ही अपने विकास का आधार बना रखा है। प्रकृति कार्बन को जहाँ तक संभव है, दबा–छिपा कर रखती है क्योंकि वह इसका खतरनाक चरित्र जानती है। हम छिपा कर रखा कार्बन उसके पेट से खोद कर निकाल लेते हैं।

कोविड–19 के दौरान लॉकडाउन ने नदियों, जल और वातावरण को साफ करने में मदद की है। लोग धरती माँ के प्रति अपनी जिम्मेदारी समझने लगे हैं। यह कार्बन रहित दुनिया बनाने के लिए सकारात्मक कदम हो सकता है। पर्यावरण ही सम्पूर्ण जीवन का आधार है जिसके संरक्षण की जिम्मेदारी हमारी ही है। हमें प्रकृति का सम्मान करना चाहिए। कोरोना महामारी ने मानव को पर्यावरण संरक्षण के महत्व से रूबरू कराया है। अगर हमने प्रकृति का सम्मान नहीं किया, उसके दोहन की स्थिति में ही रहे तो यह हमारे द्वारा विषैले वायरसों का आह्वान होगा। जो सम्पूर्ण मानव जाति के लिए एक संकट है। पर्यावरण में हम मनुष्यों द्वारा जितना जहर घोला जायेगा, प्रकृति उतने ही विषैले वायरसों का उद्‌गम स्थल बनती जायेगी। कोरोना तो एक संकेत मात्र है। सोचो तब क्या होगा जब प्रकृति अपने वीभत्स रूप में होगी। मानव जाति ना जाने कितने अनगिनत वायरसों के चपेट में आ जायेगी। सम्पूर्ण सृष्टि इसकी चपेट में होगी और मानव जाति के अस्तित्व पर संकट होगा। इसलिए हम सभी मानव जाति को प्रकृति के संकेतों को समझ जाना चाहिए। उसके संदेशों पर गौर करना चाहिए। हमें प्रकृति का सम्मान करना चाहिए। पर्यावरण संरक्षण ही मानव जाति के अस्तित्व को कायम रखने में सक्षम है। इस बात को हमें समझना चाहिए।

मुख्य शब्द : प्रकृति, घर्षण, विषैले, संकेत, प्रदूषण पर्यावरण, जीवनशैली, पलटवार, वायरस।

प्रकृति का पलटवार है कोराना[1]

हम प्रकृति के पालने में फलते–फूलते हैं। प्रकृति के साथ तालमेल जीवन का सूत्र है। तालमेल जरा भी बिगड़ा और प्रकृति का पलटवार। कोरोना काल प्रकृति की चेतावनी है। संकेत हैं कि पर्यावरण से छेड़छाड़ मानव के लिए जानलेवा साबित हो सकती है। इस वर्ष विश्व पर्यावरण दिवस की थीम है टाइम फॉर नेचर यानी प्रकृति के लिए समय। भौतिकतावाद की भागदौड़ में प्रकृति के साथ मनमर्जी इंसान के लिए भारी पड़ रही है। बेहतर भविष्य के लिए हमें संभलना होगा। कोरोना की तरह जानवरों से मनुष्यों में वायरस के संचरण के कारण जैसे जूनोटिक रोग और भी बढ़ सकते हैं क्योंकि जंगलों में इंसानी दखल बढ़ रहा है, वहीं जानवरों के प्राकृतिक आवास नष्ट हो रहे हैं और वे शहर की ओर रुख करने को मजबूर हैं।

ये समय है कि हम चेतें। प्रकृति के संदेशों को समझें। मिलकर कदम उठाएँ। खुद की देखभाल के लिए हमें पहले प्रकृति की देखभाल करनी होगी।

जंगल उजाड़े तो जानवर वायरस लाए

कोरोना भी इसलिए फैला? : अफ्रीका में इबोला के प्रकोप और जंगलों के विनाश पर शोध कर चुकीं इटली की प्रो. रूली के अनुसार, चीन में हुबेई और आसपास के प्रांत शहरीकरण व प्राकृतिक निवास स्थानों के विनाश से प्रभावित हुए हैं। यह भी हो सकता है कि यहाँ कोरोना किसी अन्य क्षेत्र से जंगली जानवरों के अवैध आयात से पहुँचा हो।

ये कारण हैं :

- जंगलों को काट कृषि का बढ़ता क्षेत्र,
- शहरी क्षेत्रों का बेलगाम विस्तार,
- सड़क निर्माण के लिए जंगलों का विनाश,
- वन्यजीवों के शिकार की बढ़ती घटनाएँ।

ये नतीजे हैं :

- जंगली जानवरों की मानव बस्तियों की ओर आवाजाही,
- इनमें से कुछ वायरस या बैक्टीरिया के भंडार भी हैं,
- हर वर्ष जानवरों से रोग संक्रमण के मामले,
- वन्य प्राणियों से फैल रहे हैं घातक वायरस।

इंसानों पर कहर : जानवरों के लिए सामान्य वायरस इंसानों के लिए जानलेवा होते हैं। चेन्नई के प्रो. राजन पाटिल के अनुसार स्वाइन फ्लू का सूअरों पर मामूली इंफेक्शन होता है लेकिन जब यह म्यूटेंट होकर इंसानों पर आता है तो जानलेवा साबित हो जाता है। मानव की प्राकृतिक प्रतिरोध क्षमता इसका मुकाबला नहीं कर पाती है।

कीटजनित रोग : डेंगू, चिकनगुनिया और जापानी एन्सेफलाइटिस।

जंगल काटे तो फैला स्क्रब टाइफस

- वनों की कटाई से भारत में स्क्रब टाइफस बीमारी फैली। कर्नाटक के शिमोगा और उसके आसपास के कसानूर फॉरेस्ट डिजीज को भी वनों की कटाई से जोड़ा गया।
- चूहों पर रहने वाले पिस्सू से लाइम रोग हुआ।
- वेस्ट नाइल जैसी मच्छर जनित बीमारी के प्राइमरी रिजर्वर भी जंगली पक्षी हैं।
- निपाह वायरस भी इकोसिस्टम में बदलाव के चलते आया, जिसने फल खाने वाले चमगादड़ों को प्राकृतिक आवास से निकलने को मजबूर किया।
- छत्तीसगढ़ में एंथ्रेक्स के प्रकोप को भी जैवविविधता के नुकसान से जोड़ा गया है।

संजोकर रखना होगा प्रकृति को...

- 75 प्रतिशत संक्रमण जनित रोग मानव में आते हैं जानवरों से।
- 8 प्रतिशत जैवविविधता भारत में पाई जाती है दुनिया की।
- 3 प्रतिशत सदाबहार वन भारत में हैं दुनियाभर के ।
- 12 प्रतिशत दुनिया की पक्षी प्रजातियाँ भारत में।
- 2 प्रतिशत भूभाग है भारत का दुनिया के क्षेत्रफल में।
- 70 प्रतिशत कैंसर की दवाएँ प्रकृति और प्राकृतिक तरीकों से बनती है।
- 50,000 से ज्यादा प्रजातियों के पेड़ और पौधे भारत में।
- 04 अरब लोग आज भी निर्भर हैं दुनिया भर में प्राकृतिक दवाओं पर।

राज्यों में पर्यावरण का हाल

देश के अहम राज्यों में पर्यावरण के हालात खतरनाक हैं। भूमिगत जलस्तर में गिरावट दर्ज की जा रही है। जंगलों का क्षेत्रफल घट रहा है। वन्यजीवों पर संकट के बादल मंडरा रहे हैं।

महाराष्ट्र राज्य में भूमिगत जल का 92 फीसदी हिस्सा सिंचाई व 7 फीसदी हिस्सा घरेलू उपभोग में आता है। परती भूति 12.44 फीसदी है। कृषि क्षेत्र में हालात गंभीर बने हुए हैं। किसानों की आमदनी दोगुनी करने के सरकारी वादे के बावजूद 2018 के दौरान राज्य में 2,239 किसानों ने आत्महत्या की। सिमटते प्राकृतिक संसाधनों के कारण बेरोजगारी की दर 20.9 फीसदी रही।

कर्नाटक राज्य के 30 जिलों के भूमिगत जल में 8 प्रदूषणकारी तत्व पाए गए हैं। 2013 में 2017 तक भूजल दोहन में 4 फीसदी की बढ़ोतरी हुई, इसमें 91 फीसदी का इस्तेमाल सिंचाई के लिए होता है। 10 हजार टन अपशिष्ट हर दिन पैदा होता है और 46 प्रतिशत अपशिष्ट असंसाधित ही रह जाता है। 2017 के बाद से 4 जिलों में वन क्षेत्र में कमी आई है।

तमिलनाडु राज्य में भूजल दोहन 2013 में 77 प्रतिशत से बढ़कर 2017 में 81 प्रतिशत हो गया। सिंचाई के लिए इसका इस्तेमाल 89 प्रतिशत है। हर दिन 15,437 टन कचरा पैदा होता है, जिसका 32 प्रतिशत भाग असंसाधित ही रह जाता है। त्रिची और तूतीकोरिन दो ऐसे जिले हैं, जहाँ पीएम10 स्वीकार्य सीमा 60 माइक्रोग्राम की तुलना में 2019 के अंत में क्रमशः 110 और 102 था।

गुजरात राज्य में भूमिगत जल का 95 फीसदी हिस्सा सिंचाई के काम आता है। पाँच फीसदी हिस्सा घरेलू उपभोग में आता है। परती भूमि का हिस्सा 10.8 फीसदी है। टिड्डियों के कारण हर वर्ष फसलों को नुकसान पहुँचता है। कृषि क्षेत्र में बढ़ते दबाव के कारण वर्ष 2018 में 21 किसानों ने आत्महत्या की।

बदलनी होगी द्वेष–लोभ भरी जीवनशैली[2]

विज्ञान ने हमें बताया है कि यह सारा खेल जलवायु परिवर्तन का है। जल और वायु दोनों ही निरन्तर हमारे निशाने पर हों और हमारा जीवन–व्यापार सामान्य चलता रहे, क्या यह सम्भव है? विज्ञान कहता है कि ऐसा नहीं हो सकता। जब आप जल और वायु में परिवर्तन करेंगे तो पर्यावरण में परिवर्तन होगा ही क्योंकि ये सब एक संतुलित चक्र में बंध कर चलते हैं। गणित के प्रमेय की तरह यह सिद्ध अवधारणा है। हवा में जब भी कार्बन की मात्रा बढ़ेगी, पर्यावरण में उसकी प्रतिक्रिया होगी। कार्बन की मात्रा बढ़ेगी तो पर्यावरण में गर्मी बढ़ेगी। गर्मी बढ़ेगी तो प्रकृति में जहाँ भी बर्फ होगी वह पिघलेगी। पहाड़ पिघलेंगे, ग्लेशियर पिघलेंगे तो समुद्र का जलस्तर बढ़ेगा। समुद्र अपनी हदें तोड़ धरती पर चढ़ जाएगा और गाँव–मुहल्ले–नगर–देश सब शनैः–शनै डूबते जाएँगे। इसका असर धरती पर होगा, नदियों–समुद्रों के पानी की सतह पर भी होगा और गर्भ में भी होगा। इसका असर धरती के नीचे की दुनिया पर भी होगा, जो डूब जाएँगे वे तो समझिए बच जाएँगे, जो बच जाएँगे वे डूब जाएँगे। फसलें मरेंगी, फल–फूल का संसार उजड़ेगा, अकाल होगा, तूफान होगा, भूकंप होगा। इतना ही नहीं होगा, कोरोना की तरह के तमाम नए अजनबी रोगों का हमला होगा। सारे वायरस जलवायु परिवर्तन की

औलादें हैं। जलवायु परिवर्तन अपनी औलादों को प्राणी–जगत तक पहुँचाता है और वे नए–नए वायरसों के वाहक बन जाते हैं। अभी हम खोज रहे हैं कि कोरोना किस प्राणी से होकर हमारे पास पहुँचा है।

जब तक हम यह खोज करेंगे तब तक प्रकृति कुछ और नए वायरस हमारे पास पहुँचा रही होगी। यह सिलसिला न आज का है, न कल खत्म होने वाला है। यह कार्बन के कंधों पर बैठा है और हमारे विकास के स्वर्णिम महल के कंधों पर कार्बन बैठा है। कार्बन को रोकना हममें से किसी के बस में नहीं है क्योंकि हमने कार्बन को ही अपने विकास का आधार बना रखा है। प्रकृति कार्बन को जहाँ तक संभव है, दबा–छिपा कर रखती है क्योंकि वह इसका खतरनाक चरित्र जानती है। हम छिपा कर रखा कार्बन उसके पेट से खोद कर निकाल लेते हैं। कोयला निकाल कर बिजली बनाते हैं, तेल निकाल कर कार व हवाई जहाज उड़ाते हैं। बिजली और कार के बीच में आ जाते हैं धरती से आकाश तक फैले हुए हमारे नाना प्रकार के आरामगाह। सब एक ही काम करते हैं, छिपाकर रखा हुआ कार्बन हवा में फेंकते हैं। जल और वायु दोनों पर लगातार कार्बन का हमला होता रहता है। प्रकृति के इंजीनियर रात–दिन इस हमले का मुकाबला करने में लगे रहते हैं लेकिन कर नहीं पाते क्योंकि यह उनकी क्षमता से कहीं बड़ा काम हो जाता है।

आप देखिए न जरा सारा संसार कोरोना की चादर तले कसमसा रहा है तो प्रकृति सँवरती जा रही है। जल और वायु दोनों धुल–पुंछ रहे हैं। नमामि गंगे परियोजना 'लॉकडाउन' में हैं लेकिन गंगा अपने उद्‌गम से लेकर नीचे तक जैसी साफ हुई है वैसी साफ गंगा तो हमारे बच्चों ने कभी देखी ही नहीं थी। हिमालय की चोटियाँ दूर से नजर आने लगी है और हमारी खिड़कियों से ऐसे पंछी दिखाई देने लगे हैं जिन्हें हमने लुप्त की श्रेणी में डाल रखा था। यह सब सिर्फ इसलिए हो रहा है कि हम अपना विकास लेकर जरा पीछे हट गये हैं। हम हटे हैं तो प्रकृति अपने काम पर लग गई है, इसलिए न पर्यावरण बचाने की जरूरत है, न धरती। जरूरत है लोभ व द्वेष से भरी अपनी जीवनशैली बदलने की, मतलब अपना कार्बन–जाल समेट लेने की।

प्रकृति न सदय होती है, न निर्दय, वह तटस्थ होती है। इसलिए कहा कि कोई भी तूफान, फिर उसका नाम अम्फान हो कि निसर्ग कि कोरोना, गुजर नहीं जाता है, कमजोर नहीं पड़ जाता है। ऊँची आवाज में अपना संदेश देकर चला जाता है, फिर से लौट आने के लिए। वह कहकर गया है और कोरोना लगातार, बार–बार कह रहा है कि पिछले कोई 10 हजार साल में तुमने जितना 'विकास' किया है उसमें ही तुम्हारे विनाश के बीज छिपे हैं। उससे हाथ खींच लो। मनुष्य और मनुष्य के बीच में दो गज की दूरी भी न रखी जा सके, ऐसी घनी आबादी के महानगर मत बनाओ। मत कहो उसे सभ्यता जो अकूत संसाधनों को खाकर ही जिंदा रह पाती है; सागरों को छोटा और आसमान को धुँधला करने वाला कोई भी काम तुम्हारे हित में बिल्कुल नहीं है।

उत्तर भारत में प्रदूषण दो दशकों में सबसे कम : नासा[3]

पूरी दुनिया में लॉकडाउन के बाद पर्यावरण और वायु की गुणवत्ता में उल्लेखनीय सुधार दर्ज किया गया।

भारत में गंगा–यमुना नदी हों या लंदन की टेम्स नदी, पानी निर्मल दिखने लगा है। जालंधर से हिमालय की चोटियाँ भी पर्यावरण की सुखद तस्वीर पेश करती है। अब नासा ने भी इस पर मुहर लगा दी हैं। नासा के सैटेलाइट सेंसर से पता चला है कि उत्तर भारत में दो दशक में वायु प्रदूषण का स्तर सबसे कम है। नासा में यूनिवर्सिटी स्पेस रिसर्च एसोसिएशन में भारतीय वैज्ञानिक पवन गुप्ता ने बताया कि हमारा अनुमान था लॉकडाउन के दौरान कई स्थानों पर वायुमण्डलीय संरचना में बदलाव आएगा। लेकिन हवा में मौजूद एयरसोल का स्तर इतना कम हो जाएगा, ये अंदाजा नहीं था। उन्होंने बताया कि वायु प्रदूषण के स्तर में कमी की वजह उत्तर भारत के कुछ इलाकों में बारिश भी है। बारिश से हवा के एयरोसॉल नीचे बैठ गए।

मौसम विज्ञानी रॉबर्ट लेवी का कहना है कि बारिश एयरोसॉल को हवा से बाहर कर देती है, पर भारी बारिश के बाद इसका स्तर बढ़ जाता है। पवन कहते हैं कि यह अच्छा संकेत है, इस बार एयरोसॉल का स्तर बढ़ा नहीं, ये तभी संभव है जब कार्बन उत्सर्जन पर अंकुश लगाया जाए।

ऐसे पता लगाया प्रदूषण का स्तर : नासा ने टेरा सैटेलाइट के मॉडरेट, रिजॉल्यूशन इमेजिंग स्पेक्ट्रोरेडिया मीटर (एमओडीआइएस) द्वारा ली गई तस्वीरों की तुलना 2016–2019 के बीच ली गई तस्वीरों के एयरोसॉल ऑप्टिकल डेप्थ (एओडी) से की है। एओडी एयरोसॉल की स्थिति को बताता है। एओडी 0.1 है तो वायुमण्डल में इसका स्तर कम है और वायुमण्डल साफ है।

क्या हैं एयरोसॉल : **एयरोसॉल** हवा में मौजूद ठोस और तरल कण से बनते हैं, जो दृश्यता कम करते हैं। इंसान के फेफड़ों और हृदय को नुकसान पहुँचाते हैं।

ये कारण प्रमुख हैं : लॉकडान के दौरान औद्योगिक इकाइयाँ बंद हैं। सड़कों पर वाहनों का संचालन थम गया। सड़क के अलावा रेल और विमान सेवा बंद है।

लॉकडाउन के दौरान कम उत्सर्जन व कम प्रदूषण का पर्यावरण पर सकारात्मक प्रभाव साफ दिखता है। कोरोना वायरस संकट का संकेत है कि बेहतर जीवन के लिए प्रकृति के साथ हमारे सम्बन्धों में तुरन्त बदलाव आवश्यक है। हमारी धरती पर वायरस का यह चौथा बड़ा हमला है। कोरोना वायरस से पहले हम सार्स, एच–1 एन–1 और मर्स के हमले भी झेल चुके हैं। ये सभी वायरस जानवरों के माध्यम से मानव शरीर में आए हैं। इस आधार पर कह सकते हैं कि प्रकृति हमें कुछ इशारा कर रही है। शायद हमें नियंत्रण में रहने का संदेश दे रही हो।

पवन सुखदेव (भारतीय पर्यावरण अर्थशास्त्री और ग्लोबल इनीशिएटिव फॉर ए संस्टेनेबल टुमॉरो (जिस्ट) के संस्थापक)[4] का कहना है कि इसमें कोई संदेह नहीं है, पर्यावरण असंतुलन का हम ही मुख्य कारण हैं। हमने ही जंगलों को नष्ट किया है, हम ही नमी वाली जगहों को ढकते जा रहे हैं, हम ही जंगली जानवरों के संसार में घुसे जा रहे हैं और हम उन्हें भोजन का हिस्सा बना रहे हैं। ऐसे में हो सकता है कि समूचा पर्यावरण तंत्र संतुलन स्थापित करने के लिहाज से अधिक वायरस छोड़ रहा हो। बदले हालात में मानव समाज के लिए नई सोच के उद्भव का समय आ चुका है। हमें स्थायी जंगलों, कृषि के बेहतर उत्पाद और यातायात के सार्वजनिक साधनों के बारे में ज्यादा सोचना होगा।

कोविड–19 संकट ने दुनिया भर के देशों की अर्थव्यवस्थाओं को हिलाकर रख दिया है। ऐसे में सवाल उठता है कि क्या कोविड–19 संकट के कारण दुनिया एक नए, न्यायसंगत और अधिक टिकाऊ विकास मॉडल को अपनाने का प्रयास करेगी? वर्तमान मंदी के दौर के बाद सरकारों को विकास और रोजगार बरकरार करने के लिए एक महत्वपूर्ण भूमिका निभानी होगी, लेकिन इसके लिए स्वास्थ्य, नवाचार, पर्यावरण आदि के नए क्षेत्रों में निवेश करना होगा और अधिक कार्बन उत्सर्जन वाली गतिविधियों में धीरे–धीरे कमी करते हुए उन्हें स्थायी तौर पर समाप्त करना होगा ताकि ग्रीन इकोनॉमी के सृजन का अवसर उत्पन्न हो सके।

कोविड–19 के दौरान लॉकडाउन ने नदियों, जल और वातावरण को साफ करने में मदद की है। लोग धरती माँ के प्रति अपनी जिम्मेदारी समझने लगे हैं। यह कार्बन रहित दुनिया बनाने के लिए सकारात्मक कदम हो सकता है। पर्यावरण ही सम्पूर्ण जीवन का आधार है जिसके संरक्षण की जिम्मेदारी हमारी ही है। हमें प्रकृति का सम्मान करना चाहिए। कोरोना महामारी ने मानव को पर्यावरण संरक्षण के महत्व से रूबरू कराया है। अगर हमने प्रकृति का सम्मान नहीं किया, उसके दोहन की स्थिति में ही रहे तो यह हमारे द्वारा विषैले वायरसों का आह्वान होगा। जो सम्पूर्ण मानव जाति के लिए एक संकट है। पर्यावरण में हम मनुष्यों द्वारा जितना जहर घोला जायेगा, प्रकृति उतने ही विषैले वायरसों का उद्गम स्थल बनती जायेगी। कोरोना तो एक संकेत मात्र है। सोचो तब क्या होगा जब प्रकृति अपने वीभत्स रूप में होगी। मानव जाति ना जाने कितने अनगिनत वायरसों के चपेट में आ जायेगी। सम्पूर्ण सृष्टि इसकी चपेट में होगी और मानव जाति के अस्तित्व पर संकट होगा। इसलिए हम सभी मानव जाति को प्रकृति के संकेतों को समझ जाना चाहिए। उसके संदेशों पर गौर करना चाहिए। हमें प्रकृति का सम्मान करना चाहिए। पर्यावरण संरक्षण ही मानव जाति के अस्तित्व को कायम रखने में सक्षम है। इस बात को हमें समझना चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. राजस्थान पत्रिका, ''**प्रकृति का पलटवार है कोरोना**'', जयपुर, 5 जून, 2020, पृ. 6
2. राजस्थान पत्रिका, प्रशान्त कुमार, ''**बदलनी होगी द्वेष–लोभ भरी जीवनशैली**'', जयपुर, 6 जून, 2020, पृ. 8
3. राजस्थान पत्रिका, ''**उत्तर भारत में प्रदूषण दो दशकों में सबसे कम : नासा**'', जयपुर, 24 अप्रैल, 2020, पृ. 1
4. राजस्थान पत्रिका, सुखदेव, पवन ''**दुनिया के लिए नई शुरुआत का वक्त**'', जयपुर, 13 जून, 2020, पृ. 6